कल्याणकारी यज्ञ को बनाएं निर्विघ्न

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू

''यह यज्ञ जादू की नगरी बन जाएगा, जब यहाँ से व्यर्थ सम्पूर्णतया समाप्त हो जाएगा'' - ये ईश्वरीय महावाक्य सुनकर ऐसा कौन होगा जो स्वयं से व्यर्थ को समाप्त करने का दृढ़ संकल्प न करे! ये यज्ञ, जो कि रूद्र यज्ञ है, जिसकी स्थापना स्वयं शिव ने अपना ज्ञान डमरू बजाकर की, सभी यज्ञों को अपने में समाहित किए हुए है। स्वयं भगवान ने इस यज्ञ को रचकर इसकी रक्षा की ज़िम्मेदारी पवित्र ब्राह्मणों को दी और कहा - '' हे राजऋषियों, तुम इस पवित्र यज्ञ से पवित्र ब्रह्मा भोजन खाओ, यह यज्ञ तुम्हारी पालना करे और तुम वृद्धि को पाते रहो, यह यज्ञ तुम्हें मन इच्छित फल प्रदान करे।''

पवित्र ब्राह्मण इस यज्ञ की रक्षा कैसे करें?

क्या बाहुबल या शस्त्र बल से? नहीं, योगबल व पवित्रता के बल से। यह यज्ञ इस कलियुग

को पावन सतयुग में बदलेगा और इससे निकली विनाश ज्वाला कलियुगी दुनिया को व उसमें बसे असुरों को भस्म करेगी। जो ब्राह्मण इसकी रक्षा करेंगे, आनेवाले महाकाल में यह यज्ञ उनकी रक्षा करेगा। यह यज्ञ जो सभी को अतुलनीय सुख प्रदान करता है, जो विश्व में शान्ति की स्थापना करता है, जो अनेकों को विघ्नों से मुक्त करता है, सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हो रहा है। यह यज्ञ अनेकों को बल प्रदान कर रहा है।

आज तक इस रूद्र यज्ञ में कितने ही पवित्र ब्राह्मणों ने अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया है। यह अलौकिक यज्ञ है, इसमें स्वाहा होने वाली चीज़ें भी सूक्ष्म हैं। जो व्यक्ति इसमें अपने विकार स्वाहा करते हैं, उन्हें यह यज्ञ स्वर्ण काया, दिव्य बुद्धि व शीतल मन प्रदान करता है। जिन्होंने अपना जीवन ही यज्ञ वृद्धि में लगा दिया, उनके भाग्य के तो कहने ही क्या! वह समय आ रहा है जबकि सम्पूर्ण विश्व ऐसी आत्माओं के चरण-रज अपने मस्तक पर रखकर स्वयं को भाग्यशाली अनुभव करेगा। परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि ऐसी आत्माओं को स्वयं के महान मूल्य को अब ही समझ लेना चाहिए।

यह ब्राह्मण परिवार भी महान है, जो कि इसी यज्ञ की रचना है। परन्तु स्वार्थ वश या गलत मान्यताओं वश या स्वयं के रहे हुए कुटिल संस्कारों वश कोई ब्राह्मण आत्मा भी इस यज्ञ में विघ्नकारी बन जाए तो अनेक कठिनाइयाँ सामने आ खड़ी होती हैं। जो यज्ञ पर कुर्बान हुए हैं उन्हें तो कहना चाहिए कि चाहे मेरा अस्तित्व भी क्यों न मिट जाए, चाहे मेरा सर्वस्व लुट जाए, किंतु यज्ञ पर आँच नहीं आनी चाहिए।

यज्ञ में विघ्न कौन से

वैसे तो सर्वशक्तिवान द्वारा रचित इस यज्ञ में भला कौन विघ्न डाल सकता है! वह स्वयं ही इसका रक्षक भी है। किसी भी शूद्र या राक्षस प्रवृत्ति वाले व्यक्ति द्वारा डाले जाने वाले विघ्नों को इस यज्ञ की पवित्र ज्वाला सहज ही नष्ट कर देती है। परन्तु यदि चोर घर में ही हो, यदि उत्पाती अन्दर छुपा हो, यदि विघ्नकारी अपने ही हों तो अवश्य ही कठिनाई होती है, परंतु विघ्नकर्ता स्वयं ही ऐसा करके अपना पैर कुल्हाड़ी पर दे मारता है। कुछ सूक्ष्म विघ्न इस प्रकार हैं –

वातावरण बिगाड़ना

यह पवित्र यज्ञ सभी को अलौकिक अनुभव कराने वाला है। अब भी हज़ारों आत्माएं यहाँ दिव्य-दर्शन करती हैं, परन्तु शीघ्र ही वह समय हम देखेंगे, जब यहाँ आते ही लोग अशरीरी हो जाया करेंगे, यहाँ आते ही उनकी हिंसात्मक वृत्ति बदल जाएगी, परन्तु यह तब होगा जब हम इस वातावरण को व्यर्थ से मुक्त करेंगे। परन्तु यदि कोई व्यक्ति व्यर्थ की गपशप से, इधर की बात उधर सुनाकर, छोटी बातों को बढ़ाकर, परचिन्तन व निन्दा चुगली करके इस वातावरण को कमज़ोर करता है तो वह स्वयं को ही कमज़ोर करता है, मानो वह भगवान की इच्छाओं को पूर्ण करने में बाधक है, तब भला ऐसे व्यक्ति की क्या गति होगी!

अपवित्रता - सबसे बड़ा विघ्न

इस पवित्र यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रज्वलित होगी। यहाँ का पवित्र वातावरण सभी को निर्विकारी बनने की प्रेरणा दे रहा है। यहाँ आकर मनुष्य विकारों को विष अनुभव कर लेता है। पवित्रता तो इसकी जान है। पवित्रता के बल से ही यह यज्ञ विश्व में सर्वाधिक शक्तिशाली है। इस बल के कारण इस यज्ञ की कोई आसुरी शक्ति कुछ भी बिगाड़ नहीं सकती। परन्तु यदि कोई दुर्बुद्धि अपनी वासनाओं व विकारों की अग्नि प्रज्वलित करे तो वह प्रभु-प्रेम का पात्र कभी भी नहीं बन सकता और ऐसी आत्मा को तीनों लोकों में कहीं भी क्षमा नहीं मिल पाएगी। इस पावन यज्ञ में सबसे बड़ा विघ्न अपवित्रता ही है। परन्तु जो आत्माएं अपनी शक्तिशाली पवित्रता से इसे बल प्रदान करते हैं, वे सर्वश्रेष्ठ भाग्य के अधिकारी होंगे और वे ही ईश्वरीय कार्य में सम्पूर्ण सहयोगी माने जायेंगे।

तेरा को मेरा कहना

प्राय: सभी ब्राह्मण इस स्थिति में रहते हैं कि ''हे प्रभु, सब कुछ तेरा''। वे अपना एक एक पैसा यज्ञ प्रति समर्पित करते हैं। वे बड़ी बड़ी यज्ञ शालाएं बनाने में तन, मन, धन का सहयोग देते हैं। परन्तु कोई लोभी या पापी मन वाला व्यक्ति यदि भगवान की सम्पत्ति पर भी - यह मेरा है, मैंने दिया है, मैंने बनाया है, ऐसी भावना रखकर अनेकों के लिए समस्या पैदा करता है तो उसे तो कहां भी स्थान नहीं मिलेगा, अर्थात् उसकी दुर्गति तो निश्चित है।

टकराव - भयंकर विघ्न

भगवान की सेवाओं में हम टकरायें, तो लोग हमें टकराने वाले पत्थर ही कहेंगे। चाहे टकराव किसी भी कारण से हो, अपवित्रता के कारण, ईर्ष्या के कारण, तेरे मेरे के कारण या गलत संस्कार व्यवहार के कारण – ये यज्ञ में भयंकर विघ्न है, यज्ञ को निर्बल करके यज्ञ-वत्सों को उदास करने वाला है। इसलिए जो भी यज्ञ प्रेमी हैं वे स्वयं ही झुककर, कुछ सहन करके, कुछ समाकर व कुछ भुलाकर, यज्ञ को इस विघ्न से मुक्त करते चलें।

जो व्यक्ति अपने टकराव के स्वभाव के कारण यज्ञ की वृद्धि में विघ्न डालते हैं, उन पर भी भारी बोझ चढ़ता है। वे इस सत्य को महसूस करें। हमारा तो जीवन ऐसा हो जो हमें देखकर सर्वस्व स्वाहा करने वालों की कतार लग जाए।

स्वयं निर्विघ्न तो यज्ञ निर्विघ्न

यदि यज्ञ में कोई कुछ भी सेवा नहीं करते परन्तु अपनी स्थिति को श्रेष्ठ व निर्विघ्न रखते हैं तो वे भी यज्ञ के सहयोगी हैं। जब एक मनुष्य की अपनी स्थिति में विघ्न होता है तो वह दूसरों को विघ्न अवश्य डालता है। चिरचिरा मनुष्य दूसरों से अवश्य टकराता है, जिससे गलत व्यवहार हुआ हो वह अवश्य ही दूसरों से गलत व्यवहार करता है, जिसमें स्वयं काम-क्रोध के कीटाणु बसे हों वह अवश्य ही उनका प्रसार करता है। परन्तु इन सब से जीवन में सन्तोष कहाँ...

यदि जीवन निर्विघ्न नहीं तो सच्चा सुख भी नहीं। विघ्नों की अग्नि शान्ति को जला डालती है। आप देख लें कि विघ्नों के बीज कहीं संकल्प रूप में आपने स्वयं में बोये हुए तो नहीं हैं? विघ्न तो आयेंगे ही, परन्तु उनके वश न होना, धैर्यता व हिम्मत से उन्हें पार कर लेना - यही निर्विघ्न स्थिति है।

यदि आपके पुरुषार्थ में भी बार-बार विघ्न पड़ रहे हैं तो उसका कारण ढूंढ लो। थोड़ी सी मेहनत करके उन्हें दूर किया जा सकता है। और जिस दिन स्वयं के पुरुषार्थ का मार्ग साफ़ हो जाएगा, उसी दिन विघ्न आने कम हो जाएंगे और आने वाले विघ्नों को भी हम सहज ही पार कर सकेंगे।

- शेष पेज 9 पर...

दिल्ली-पीतमपुरा। 'हेल्दी वेल्दी हैप्पी लाइफ' विषयक कार्यक्रम में सभी को ब्लैसिंग देते हुए ब्र.कु. संतोष,सेंट पीटर्सबर्ग रशिया। साथ हैं ब्र.कु. प्रभा, सुरेश भाटिया तथा विनोद गर्ग,रिटायर्ड सीनियर ऑफिसर,एयर इंडिया।

महम-हरियाणा। महिला दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए बैंक मैनेजर श्रीमती एकता, एडवोकेट श्रीमती रंजना, प्रिन्सीपल श्रीमती कनिका, ब्र.कु. चेतना तथा ब्र.कु. सुमन।

राजखरियार-ओडिशा। विधायक बसंत कुमार पांडा को आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी समझाते हुए ब्र.कु.सूर्य कांति।

ब्रह्मपुर-ओडिशा। नवनिर्वाचित जिला के सभ्य, सरपंच, जिला परिषद एवं अध्यक्ष के लिए आयोजित सम्मान समारोह में केक काटते हुए सांसद रानी प्रत्युषा राजेश्वरी सिंह देव, मेयर माधवी जी व ब्र.कु.मंजु। साथ हैं ब्र.कु.मालो, ब्र.कु. प्रभाति व ब्र.कु.लक्ष्मी।

हाथरस-उ.प्र.। 'व्यसन मुक्त भारत अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं नगरपालिका अध्यक्ष ओमप्रकाश यादव, जिलाधिकारी अविनाश कृष्ण सिंह, नगरपालिका के अधिशासी अधिकारी अशोक शर्मा, ग्राम प्रधान उदयप्रताप सिंह, ब्र.कु.शांता, ब्र.कु.नीतू, ब्र.कु.उमा, ब्र.कु.दुर्गेश तथा अन्य।

निर्माण नगर-जयपुर। गर्मी में पक्षियों के लिए उद्यान में परिण्डे बांधने के कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए ब्र.कु. सरिता तथा ब्र.कु. भाई बहनें।